कमला नेहरू महिला महाविद्यालय ; भुबनेश्वर

हिंदी विभाग ; ई – पत्रिका

हिंदी भारती

श्रद्धांजली

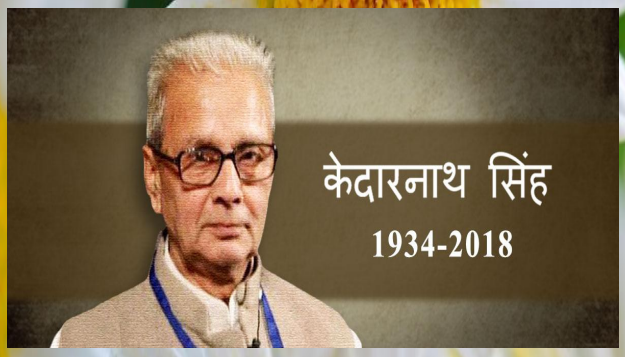

मार्च - 2018

संपादक मंडली

संपादक : डॉ. वेदुला रामालक्ष्मी

डॉ. मनोरमा मिश्रा

उप – संपादक : कु. प्रियंका प्रियदर्शिनी परिडा

कु. शुभश्री शताब्दी दास

संपादकीय

"हिंदी भारती" के पाठकों को "उत्कल दिवस" की हार्दिक अग्रिम शुभकामनायें

"हिंदी भारती" का मार्च अंक "स्व. केदारनाथ सिंह जी" के नाम समर्पित है। प्रमुख आधुनिक हिंदी कवियों एवं लेखकों में से एक केदारनाथ सिंह चर्चित कविता संकलन 'तीसरा सप्तक' के सहयोगी कवियों में से एक हैं। आपकी कविताओं के अनुवाद लगभग सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं के अलावा अंग्रेज़ी, स्पेनिश, रूसी, जर्मन और हंगेरियन आदि विदेशी भाषाओं में भी हुए हैं। आपने कविता पाठ के लिए दुनिया के अनेक देशों की यात्राएँ की हैं। आपको वर्ष 2013 के लिए देश का सर्वोच्च साहित्य सम्मान ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान किया गया। आपकी कवितायें हर हिंदी विद्यार्थी के पाठ्यक्रम का हिस्सा होती हैं। आपका निधन 19 मार्च 2018 को हुआ। हमारी विनम श्रद्धांजलि।

हिंदी विभाग का यह प्रयास है कि ई - पत्रिका के माध्यम से छात्राओं में हिंदी लेखन एवं पठन में रुची हो, साथ ही हिंदी एवं हिंदी साहित्य की समृद्धशाली परम्परा से परिचय हो। अत: कोशिश की जाती है कि सृजन के साथ - साथ भाषा एवं साहित्य से सम्बंधित अन्य महत्वपूर्ण जानकारी भी छात्राओं तथा पाठकों तक समय - समय पर पहुँचती रहे । इस मासिक पत्रिका का छठा अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। आशा है आपका आदर और स्नेह इसी तरह मिलता रहेगा।

संपादक : डॉ. वेदुला रामालक्ष्मी

डॉ. मनोरमा मिश्रा

अनुक्रमणिका

क्र सं.	शीर्षक	विधा	रचनाकार	पृ सं.
1	ओडिशा	लेख	मनीषा साहू, +3	5
2	श्रद्धांजली	लेख	संग्रहित	10
3	केदारनाथ सिन्ह जी का सृजन	कवितायें	संग्रहित	13
4	पिता पुत्र	कहानी	लेखक - डॉ प्रदीप्त कुमार मिश्र अनुवाद - डॉ वेदुला रामालक्ष्मी	15
5	कुकुरमुत्ता	संस्मरण	पिंकी सिंह, +3 द्वितीय वर्ष	18
6	राष्ट्रभाषा हिंदी	लेख	लिज़ा मिश्र, +3 द्वितीय वर्ष	19
7	भारतेंदु हरिश्चंद्र	लेख	निहारिका, +3 प्रथम वर्ष	21
8	रीतिमुक्त कवि घनानन्द	लेख	सस्मिता महांति, +3 प्रथम वर्ष	22
9	जो मां ना होती	कविता	हाफिज़ा, +3 प्रथम वर्ष	24
10	पानी	कविता	कादम्बिनी पण्डा, +3 प्रथम वर्ष	24
11	स्वामी विवेकानंद के जीवन के तीन प्रेरक प्रसंग	जीवनी	हाफिज़ा, +3 प्रथम वर्ष	25
12	श्रेय	कहानी	लेखक :- श्री सुजित पंडा अनुवाद :- डॉ. वेदुला रामालक्ष्मी	27
13	मदद	विचार	सोनिआ नायक, +3 द्वितीय वर्ष	32
14	वह सूरज डूब रहा था	कविता	पिंकी सिंह, +3 द्वितीय वर्ष	33
15	सपने, मुसीबत	कविता	शरीफा शरवारी, +3 प्रथम वर्ष	33
16	यादों के गलियारों से			34

ओडिशा

1 अप्रैल 1936, को ओडिशा राज्य बना। **भारत** में उन ओडिशा के इतिहास के लोगों को याद किया जाता जिन्होंने ओडिशा को आगे ले जाने और सफल बनाने के लिए अपना बहुत बड़ा योगदान और बलिदान दिया था। इस दिन को **उत्कल दिवस / ओडिशा दिवस** के नाम से मनाया जाता है| उत्कल दिवस ना सिर्फ भारत के अलग-अलग राज्यों में मनाया जाता है बल्कि यह उन देशों में भी मनाया जाता है जहाँ ओडिशा के लोग रहते हैं। ओड़िशा नाम की उत्पत्ति संस्कृत के ओड्र विषय या ओड्र देश से हुई है। ओडवंश के राजा ओड्र ने इसे बसाया। पाली और संस्कृत दोनों भाषाओं के साहित्य में ओड्र लोगों का उल्लेख क्रमशः ओद्दाक और ओड्रः के रूप में किया गया है। प्लिनी और टोलेमी जैसे यूनानी लेखकों ने ओड्र लोगों का वर्णन **ओरेटस** कह कर किया है। महाभारत में ओड्रओं का उल्लेख **पौन्द्र, उत्कल, मेकल, कलिंग** और **आंध्र** के साथ हुआ है, जबकि मनु के अनुसार ओड्र लोग **पौन्द्रक, यवन, शक, परद, पल्ल्व, चिन, कीरत** और **खरस** से संबंधित हैं। प्लिनी के प्राकृतिक इतिहास में ओरेटस लोग उस भूमि पर वास करते हैं जहां **मलेउस पर्वत** खड़ा है। यहां यूनानी शब्द ओरेटस संभवत: संस्कृत के ओड्र का यूनानी संस्करण है जबकि, मलेउस पर्वत पाललहडा के समीप स्थित मलयगिरि है। प्लिनी ने मलेउस पर्वत के साथ **मोन्देस** और **शरीस** लोगों को भी जोड़ा है जो संभवत: ओड़िशा के पहाड़ी क्षेत्रों में वास करने वाले **मुंडा** और **सवर** लोग हैं।

भूगोल

ओड़िशा की राजधानी **भ्वनेश्वर** है जो की ओड़िशा के पूर्व राजधानी **कटक** से सिर्फ २९ किमी दूर है। भ्वनेश्वर भारत के अत्याध्निक शहरों में से है, जिसकी वर्तमान में जनसंख्या करीब 25 लाख है। भुवनेश्वर और कटक दोनों शहरों को मिलाकर ओड़िशा का युग्म शहर भी कहा जाता है। इन दोनों शहरों को मिलाकर कुल 40 लाख आबादी है जो एक महानगर जैसे शहर का निर्माण करती है। इसलिए इन दोनों शहरो का विकास तेजी से हो रहा है। ओड़िशा **महानदी**, **ब्राह्मणी**, **बैतरणी** आदि प्रमुख नदीयों से सिंचता है। यह इलाका अत्यंत उपजाऊ है और यहां पर सघन रूप से चावल की खेती की जाती है। ओड़िशा के झीलों में **चिलिका** और **अंशुपा** प्रधान हैं। महानदी के दक्षिण में तटवर्ती इलाके में अवस्थित **चिलिका** पुरे एसिया महादेश का सबसे बड़ी खारे पानी की झील है।

पर्यटन

- सूर्य मंदिर, कोणार्क
- राज्य की राजधानी भुवनेश्वर लिंगराज मन्दिर के लिए प्रसिद्ध है।
- पुरी का जगन्नाथ मन्दिर
- सुंदर पुरी तट
- राज्य के अन्य प्रसिद्ध पर्यटन केंद्र हैं कोणार्क, नंदनकानन, चिलका झील, धौली बौद्ध मंदिर, उदयगिरि-खंडगिरि की प्राचीन गुफाएं, रत्नगिरि, ललितगिरि और उदयगिरि के बौद्ध भित्तिचित्र और गुफाएं, सप्तसज्या का मनोरम पहाडी दृश्य, सिमिलिपाल राष्ट्रीय उद्यान तथा बाघ परियोजना, हीराकुंड बांध, दुदुमा जलप्रपात, उषाकोठी वन्य जीव अभयारण्य, गोपानपुर समुद्री तट, हरिशंकर, नृसिंहनाथ, तारातारिणी, तप्तापानी, भितरकणिका, भीमकुंड कपिलाश आदि स्थान प्रसिद्ध हैं।

अर्थव्यवस्था

राज्य के कुल क्षेत्रफल के लगभग 45 प्रतिशत भाग में खेत है। इसके 80 प्रतिशत भाग में चावल उगाया जाता है। अन्य महत्त्वपूर्ण फ़सलें तिलहन, दलहन, जूट, गन्ना और नारियल है। सूर्य के प्रकाश की उपलब्धता में कमी, मध्यम गुणवत्ता वाली मिट्टी, उर्वरकों का न्यूनतम उपयोग और मानसूनी वर्षा के समय व मात्रा में विविधता होने के कारण यहाँ उपज कम होती है। उद्योग प्रोत्साहन एवं निवेश निगम लि. औद्योगिक विकास निगम लिमिटेड और ओडिशा राज्य इलेक्ट्रॉनिक्स विकास निगम ये तीन प्रमुख एजेंसियां राज्य के उद्योगों को आर्थिक सहायता प्रदान करती है। अस्पताल, एल्यूमीनियम, तेलशोधन, उर्वरक आदि विशाल उद्योग लग रहे हैं। ओडिशा के औद्योगिक संसाधन उल्लेखनीय हैं। क्रोमाइट, मैंगनीज़ अयस्क और डोलोमाइट के उत्पादन में ओडिशा **भारत** के सभी राज्यों से आगे है।

ओडिशा के इतिहास का चरणबद्ध विकास

261 ईसा पूर्व से 49 ईसा पूर्व

261 ईसा पूर्व: ओडिशा का इतिहास मगध नरेश अशोक के नेतृत्व में लड़ा गया खूनी कलिंग युद्ध से जुड़ा हुआ है। इस युद्ध से बौद्ध धर्म मानने के बावजूद इस खूनी युद्ध से अशोक अहिंसा की ओर मुड़ गया| लेकिन बाद में अशोक ने बौद्ध के प्रचार प्रसार के लिए काफी काम किया।

232 ईसा पूर्व: अशोक की मृत्यु। 185 ईसवी पूर्व में मौर्य साम्राज्य का पतन।

पहली शताब्दी ईसा पूर्व: पहली शताब्दी ईसा पूर्व में प्रथम चेदी राजा महामेघवहन के नेतृत्व में मौर्य शासन को सत्ता से बाहर कर दिया गया

49 ईसा पूर्व: तीसरे चेदी राजा ने सत्ता संभालते ही युद्ध शुरू कर दिया। उसने अपने साम्राज्य का विस्तार पूर्व से लेकर पश्विम भारत तक कर लिया था। मथुरा से लेकर उत्तर में पंड्या राज्य तथा दक्षिण तक उसका विस्तार हो गया। उसके शासनकाल में जैन धर्म काफी फला फूला।

पहली शताब्दी ईसवी से 736 ईसवी तक

दूसरी शताब्दी ईसवी: ईसवी 2 के शुरुआती दिनों में पश्चिम (नाशिक) के सताभाना राजा गौतमीपुत्र सताकरनी ने हथिया लिया। सताभानियों का शासन याजनासरी सताकरनी के शासन (174-202 ईसवी) तक चलता रहा।

350 ईसवी: मगध सम्राट समुद्रगुप्त ने दक्षिण क्षेत्र में खूब प्रचार-प्रसार किया और इसके बाद कलिंग के हिस्सों को जीत लिया।

350-498 ईसवी: समुद्रगुप्त के आक्रमण के बाद एक सत्ता शक्ति मराठाओं के रूप में उभरी (आधुनिक पारलाखेमुंडी से) और कलिंग पर इनका शासन 498 ईसवी तक चला।

6-7 शताब्दी ईसा पूर्व: सैलोधभाव नामक नए साम्राज्य का उदय हुआ जिन्होंने ओडिशा के तटीय क्षेत्रों उत्तर में महानदी और दक्षिण महेंद्रगिरी तक अपने साम्राज्य का विस्तार करना शुरू किया।

621 ईसवी

1. **थानेश्वर (आधुनिक हरियाणा) के शासक** हर्षवर्द्धन ने उत्कल पर आक्रमण किया और चिलिका झील तक आक्रमण कर लिया ।
2. 630 ईसवी में बौद्ध धर्म का नवीकरण किया गया।

3. हुआंन तसांग ने ओडिशा का भ्रमण किया।

647 ईसवी: अंतिम हिंदू भारतीय शासक हर्षवर्द्धन की मृत्यु हो गई।

736 ईसवी: भुआमा युग का आरंभ उनमत्तासिमाह यानी सिवाकारदेवा,जिन्होंने सैलोधभाव पर कब्जा किया था, से हुआ। भुआमाओं ने बौद्ध धर्म को संरक्षण प्रदान किया। इस युग की पहचान इनकी महिला शासकों त्रिभुवना महादेवी और डांडी महादेवी से भी की जा सकती है।

मध्यकाल I (931 ईसवी से 1467 ईसवी(

931 ईसवी: सोमवंशी साम्राज्य का आरंभ हुआ। सोमवंशियों ने 1110 ईसवी तक अपना आक्रमण जारी रखा। मंदिरों के निर्माण की दृष्टि से इनके शासनकाल को बेहतरीन कहा जा सकता है और भुवनेश्वर उसका मुख्य केंद्र था। सोमवंशी राजा महासिवागुप्ता यायात द्वितीय की ताजपोशी के बाद ओडिशा का सबसे बौद्धिक काल शुरू हुआ। ऐसा माना जाता है कि इन्होंने पुरी में भगवान जगन्नाथ की 38 मंदिरों का निर्माण करवाया। इन्हें भुवनेश्वर में लिंगराज मंदिर की नींव रखने के लिए जाना जाता है।

1038 ईसवी: वज्रस्था वी ने सोमवंशी शासक काम देव को पराजित कर कलिंग पर गंग साम्राज्य की स्थापना की थी।

1050 ईसवी: भुवनेश्वर में लिंगराज मंदिर का निर्माण सोम साम्राज्य के लालाटेंदू केशरी ने पूरा करवाया।

1115 ईसवी: भगवान जगन्नाथ मंदिर का निर्माण प्रारंभ।

1211 ईसवी: अनंगभीम देव तृतीय साम्राज्य को उन्नति के शिखर पर ले गए। ऐसा माना जाता है कि पुरी में जगन्नाथ मंदिर का निर्माण कार्य इन्होंने ही पूरा करवाया था। अनंगभीम देव ने काठजोड़ी और महानदी नदियों के विभाजन क्षेत्र में कटक में अभिनव बिदांसाई(आधुनिक कटक) नामक शहर बसाया।

1238 ईसवी: अनंगभीम देव की मृत्यु 1238 ईसवी में हो गई। इनके पुत्र नरसिंह देव सत्ता में आए। कोर्णाक में सूर्य देवता के मंदिर के निर्माण के बाद इनकी लोकप्रियता और बढ़ गई।

1435 ईसवी-1467 ईसवी

1. कपिलेंद्र देव ने ओडिशा साम्राज्य की स्थापना की।
2. इस दौरान उडिया महाभारत की रचना की गई।

मध्यकाल II (1567 से 1764)

1567: बंगाल के सुल्तान सुलेमान कारानी ने ओडिशा पर आक्रमण कर दिया।

1568: वह ओडिशा पर कब्जा करने में कामयाब रहा और इसके बाद ओडिशा में अफगान शासन की शुरुआत हुई।

1590-1595: जब अफगानों ने दिल्ली पर मुगलों के शासन से इनकार कर दिया तो ओडिशा मुगलों और अफगानियों के बीच युद्ध का अखाड़ा बन गया। यह युद्ध 1590-1595 तक चलता रहा और अफगानियों की हार के साथ खत्म हुआ।

1607: अकबर के उत्तराधिकारी पुत्र जहांगीर ने ओडिशा को दो अलग प्रांतों में विभाजित किया गया और कटक को उसकी राजधानी बनाकर सूबेदार के अंतर्गत रखा गया।

1670: कवि सम्राट उपेंद्र भंज का जन्म लगभग 1670 ईसवी में हुआ था।

1751 - 1803: ओडिशा के मराठा प्रशासन की शुरुआत रघुजी भोंसले प्रथम प्रशासन के नए मुखिया बन गए। मराठाओं का शासन 1803 तक चला। मराठा शासकों ने धर्म और धार्मिक संस्थाओं को संरक्षण प्रदान किया और इससे ओडिशा आकर्षण का केंद्र बन गया। इस दौरान उडिया साहित्य का विकास तीव्र गति से हुआ।

1633: ईस्ट इंडिया कंपनी ने हरिहरपुर और बालासोर में अपने व्यापार केंद्र बनाए।

1757 - 1764: A1757 के पलासी युद्ध और 1764 के बक्सर युद्ध के बाद ब्रिटिश प्रशासन ने अधिक से अधिक भारतीय क्षेत्रों पर अधिकार कर लिया। बंगाल का पड़ोसी राज्य होने के कारण यह स्वाभाविक रूप से उनकी योजना में शामिल हो गया।

1807: उडिया में प्रकाशित पहली पुस्तक थी "न्यू टेस्टामेंट" जिसका प्रकाशन सेरामपोर बैपटिस्ट मिशन प्रेस ने किया था।

1817: बख्शी जगबंधु विद्याधर के नेतृत्व में खुर्दा के पाइको ने अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह छेड़ दिया जिसे 1817 का पाइक विद्रोह कहा जाता है। यह विद्रोह अंग्रेजों की जमीन संबंधी एवं कर संबंधी गलत नीतियों के कारण छिड़ा।

1822: ओडिशा में मिशनरीज का आगमन।

1837: मिशनरीज द्वारा कटक मिशन प्रेस की स्थापना।

1839: पर्शियन की जगह उडिया को अदालत की भाषा के रूप में अपनाया गया।

1843: फकीर मोहन सेनापति का जन्म।

1848: खुलाबरुद्ध मधुसूदन दास का जन्म।

1849: मिशनरीज द्वारा पहली उडिया पत्रिका "जनारुना" का प्रकाशन किया।

उत्कल गौरव मधुसूदन दास, उत्कलमणि गोपबंधु दास, महाराजा श्री रामचंद्र भंजदेव, महाराजा श्री कृष्ण चन्द्र बैकुंठनाथ डे, फ़क़ीर मोहन सेनापति, गंगाधर मेहर और गौरीशंकर रे जी के अग्रणी प्रयासों के कारण ओडिशा एक अलग सुन्दर भाषाओं परम्पराओं का राज्य बन पाया।

1936 **ईसवी**: **1 अप्रैल को ओडिशा एक अलग राज्य बन गया।**

मनीषा साहू, +3 प्रथम वर्ष

श्रद्धांजली

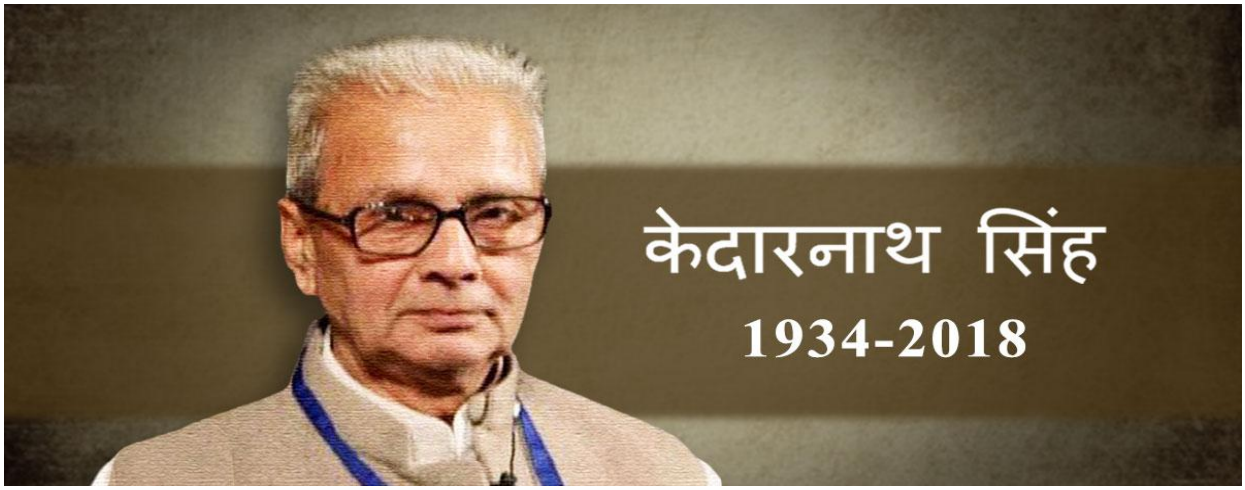

केदारनाथ सिंह (जन्म: 7 जुलाई, 1934 - मृत्यु :19 मार्च, 2018) प्रमुख आधुनिक हिंदी कवियों एवं लेखकों में से हैं। केदारनाथ सिंह चर्चित कविता संकलन 'तीसरा सप्तक' के सहयोगी कवियों में से एक हैं। इनकी कविताओं के अनुवाद लगभग सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं के अलावा अंग्रेज़ी, स्पेनिश, रूसी, जर्मन और हंगेरियन आदि विदेशी भाषाओं में भी हुए हैं। कविता पाठ के लिए दुनिया के अनेक देशों की यात्राएँ की हैं।

जीवन परिचय

केदारनाथ सिंह का जन्म 7 जुलाई, 1934 में उत्तर प्रदेश के बलिया ज़िले के चकिया गाँव में हुआ था। इन्होंने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (बीएचयू) से 1956 में हिन्दी में एम.ए. और 1964 में पी.एच.डी की। केदारनाथ सिंह ने कई कालेजों में पढ़ाया और अन्त में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष पद से सेवानिवृत्त हुए। इन्होंने कविता व गद्य की अनेक पुस्तकें रची हैं और अनेक सम्माननीय सम्मानों से सम्मानित हुए। आप समकालीन कविता के प्रमुख हस्ताक्षर हैं। केदारनाथ सिंह की कविता में गाँव व शहर का द्वन्द्व साफ नजर आता है। 'बाघ' इनकी प्रमुख लम्बी कविता है, जो मील का पत्थर मानी जा सकती है।

साहित्यिक परिचय

यह कहना काफ़ी नहीं कि केदारनाथ सिंह की काव्य-संवेदना का दायरा गांव से शहर तक परिव्याप्त है या यह कि वे एक साथ गांव के भी कवि हैं तथा शहर के भी। दरअसल केदारनाथ पहले गांव से शहर आते हैं फिर शहर से गांव, और इस यात्रा के क्रम में गांव के चिह्न शहर में और शहर के चिह्न गांव में ले जाते हैं। इस आवाजाही के चिह्नों को पहचानना कठिन नहीं हैं, परंतु प्रारंभिक यात्राओं के सनेस बहुत कुछ नए दुल्हन को मिले भेंट की तरह है, जो उसके बक्से में रख दिए गए हैं। परवर्ती यात्राओं के सनेस में यात्री की अभिरुचि स्पष्ट दिखती है, इसीलिए 1955 में लिखी गई 'अनागत' कविता की बौद्धिकता धीरे-धीरे तिरोहित होती है, और यह परिवर्तन जितना केदारनाथ सिंह के लिए अच्छा रहा, उतना ही हिंदी साहित्य के लिए भी। बहुत कुछ नागार्जुन की ही तरह केदारनाथ के कविता की भूमि भी गांव की है। दोआब के गांव-जवार, नदी-ताल, पगडंडी-मेड़ से बतियाते हुए केदारनाथ न अज्ञेय की तरह बौद्धिक होते हैं न प्रगतिवादियों की तरह भावुक। केदारनाथ सिंह बीच का या बाद का बना रास्ता तय करते हैं। यह विवेक कवि शहर से लेता है, परंतु अपने अनुभव की शर्त पर नहीं, बिल्कुल चौकस होकर। केदारनाथ सिंह की कविताओं में जीवन की स्वीकृति है, परंतु तमाम तरलताओं के साथ यह आस्तिक कविता नहीं है।

मैं जानता हूं बाहर होना एक ऐसा रास्ता है
जो अच्छा होने की ओर खुलता है
और मैं देख रहा हूं इस खिड़की के बाहर
एक समूचा शहर है

मुख्य कृतियाँ

कविता संग्रह

- अभी बिल्कुल अभी
- जमीन पक रही है
- यहाँ से देखो
- बाघ
- अकाल में सारस
- उत्तर कबीर और अन्य कविताएँ
- तालस्ताय और साइकिल

आलोचना

- कल्पना और छायावाद
- आधुनिक हिंदी कविता में बिंबविधान
- मेरे समय के शब्द
- मेरे साक्षात्कार

संपादन

- ताना-बाना (आधुनिक भारतीय कविता से एक चयन)
- समकालीन रूसी कविताएँ
- कविता दशक
- साखी (अनियतकालिक पत्रिका)
- शब्द (अनियतकालिक पत्रिका)

सम्मान और पुरस्कार

- ज्ञानपीठ पुरस्कार
- मैथिलीशरण गुप्त सम्मान
- कुमारन आशान पुरस्कार
- जीवन भारती सम्मान
- दिनकर पुरस्कार
- साहित्य अकादमी पुरस्कार
- व्यास सम्मान

प्रख्यात कवि केदारनाथ सिंह को मिला ज्ञानपीठ पुरस्कार

हिंदी की आधुनिक पीढ़ी के रचनाकार केदारनाथ सिंह को वर्ष 2013 के लिए देश का सर्वोच्च साहित्य सम्मान ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान किया गया। वह यह पुरस्कार पाने वाले हिन्दी के 10वें लेखक थे। ज्ञानपीठ की ओर से शुक्रवार 20 जून, 2014 को यहां जारी विज्ञप्ति के अनुसार सीताकांत महापात्रा की अध्यक्षता में हुई चयन समिति की बैठक में हिंदी के जाने माने कवि केदारनाथ सिंह को वर्ष 2013 का 49वाँ ज्ञानपीठ पुरस्कार दिये जाने का निर्णय किया गया। इससे पहले हिन्दी साहित्य के जाने माने हस्ताक्षर सुमित्रानंदन पंत, रामधारी सिंह दिनकर, सच्चिदानंद हीरानंद वात्सयायन अज्ञेय, महादेवी वर्मा, नरेश मेहता, निर्मल वर्मा, कुंवर नारायण, श्रीलाल शुक्ल और अमरकांत को यह पुरस्कार मिल चुका है। पहला ज्ञानपीठ पुरस्कार मलयालम के लेखक गोविंद शंकर कुरुप (1965) को प्रदान किया गया था।

निधन

सुप्रसिद्ध साहित्यकार केदारनाथ सिंह (आयु- 84 वर्ष) का 19 मार्च, 2018 को सोमवार शाम नई दिल्ली के अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) में निधन हो गया। उन्हें 2013 में 49वें ज्ञानपीठ पुरस्कार से नवाजा गया। था। भारतीय ज्ञानपीठ के डायरेक्टर लीलाधर मंडलोई ने उनके निधन की जानकारी दी। मंडलोई के अनुसार, "केदारनाथ सिंह को कोलकाता में न्यूमोनिया हो गया था। उनका करीब एक महीने से इलाज चल रहा था। वे साल ठंड में अपनी बहन के यहां कोलकाता जाते थे।" "उनकी हालत में सुधार हुआ था लेकिन बाद में उनकी तबीयत बिगड़ गई। केदारनाथ सिंह को दिल्ली के साकेत और मूलचंद अस्पताल में भर्ती कराया गया था, बाद में उन्हें एम्स में स्थानांतरित कर दिया गया।" एम्स के सूत्रों ने बताया कि सिंह को 13 मार्च को वहां लाया गया था।

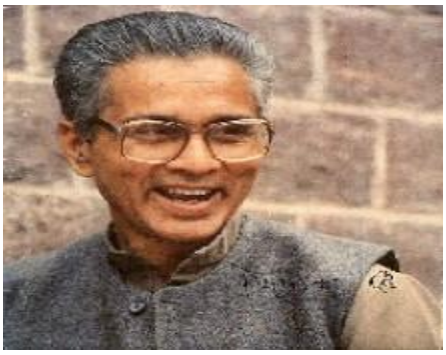

केदारनाथ सिंह जी का सृजन

नए कवि का दुख

दुख हूँ मैं एक नये हिन्दी कवि का
बाँधो
मुझे बाँधो
पर कहाँ बाँधोगे
किस लय, किस छन्द में?

ये छोटे छोटे घर
ये बौने दरवाजे
ताले ये इतने पुराने
और साँकल इतनी जर्जर
आसमान इतना जरा सा
और हवा इतनी कम कम
नफरतयह इतनी गुमसुम सी
और प्यार यह इतना अकेला
और गोल -मोल
बाँधो
मुझे बाँधो
पर कहाँ बाँधोगे
किस लय , किस छन्द में?

क्या जीवन इसी तरह बीतेगा
शब्दों से शब्दों तक
जीने
और जीने और जीने और जीने के
लगातार द्वन्द में?

जब वर्षा शुरु होती है

जब वर्षा शुरु होती है
कबूतर उड़ना बन्द कर देते हैं
गली कुछ दूर तक भागती हुई जाती है
और फिर लौट आती है

मवेशी भूल जाते हैं चरने की दिशा
और सिर्फ रक्षा करते हैं उस धीमी गुनगुनाहट
की
जो पत्तियों से गिरती है
सिप् सिप् सिप् सिप्

जब वर्षा शुरु होती है
एक बहुत पुरानी सी खनिज गंध
सार्वजनिक भवनों से निकलती है
और सारे शहर में छा जाती है

जब वर्षा शुरु होती है
तब कहीं कुछ नहीं होता
सिवा वर्षा के
आदमी और पेड़
जहाँ पर खड़े थे वहीं खड़े रहते हैं
सिर्फ पृथ्वी घूम जाती है उस आशय की ओर
जिधर पानी के गिरने की क्रिया का रुख होता ह

चट्टान को तोड़ो वह सुन्दर हो जायेगी

चट्टान को तोड़ो
वह सुन्दर हो जायेगी
उसे तोड़ो
वह और, और सुन्दर होती जायेगी

अब उसे उठालो
रख लो कन्धे पर
ले जाओ शहर या कस्बे में
डाल दो किसी चौराहे पर
तेज़ धूप में तपने दो उसे

जब बच्चे हो जायेंगे
उसमें अपने चेहरे तलाश करेंगे
अब उसे फिर से उठाओ
अबकी ले जाओ उसे किसी नदी या समुद्र के किनारे
छोड़ दो पानी में
उस पर लिख दो वह नाम
जो तुम्हारे अन्दर गूँज रहा है
वह नाव बन जायेगी

अब उसे फिर से तोड़ो
फिर से उसी जगह खड़ा करो चट्टान को
उसे फिर से उठाओ
डाल दो किसी नींव में
किसी टूटी हुई पुलिया के नीचे
टिको दो उसे
उसे रख दो किसी थके हुए आदमी के सिरहाने

अब लौट आओ
तुमने अपना काम पूरा कर लिया है
अगर कन्धे दुख रहे हों
कोई बात नहीं
यक़ीन करो कन्धों पर
कन्धों के दुखने पर यक़ीन करो

यकीन करो
और खोज लाओ
कोई नई चट्टान!

जूते

सभा उठ गई
रह गए जूते
सूने हाल में दो चकित उदास
धूल भरे जूते
मुँहबाए जूते जिनका वारिस
कोई नहीं था

चौकीदार आया
उसने देखा जूतों को
फिर वह देर तक खड़ा रहा
मुँहबाए जूतों के सामने
सोचता रहा -
कितना अजीब है
कि वक्ता चले गए
और सारी बहस के अंत में
रह गए जूते

उस सूने हाल में
जहाँ कहने को अब कुछ नहीं था
कितना कुछ कितना कुछ
कह गए जूते

पिता पुत्र

लेखक - डॉ प्रदीप्त कुमार मिश्र
अनुवाद - डॉ वेदुला रामालक्ष्मी

पिंटू दास बोल रहा था। छोटा बेटा टीमन सुन रहा था।

- फिर क्या हुआ, बाघ मेरी तरफ आँखे फाड़ कर देखने लगा। उसकी दोनो आंखे आँगरों की तरह लाल दहक रही थी। बड़े गुस्से में था। कहने लगा - मेरे राज्य में तू कौन है रे नीच? मैं सतर्क हो गया। मैं धीरे - धीरे एक पेड़ की ओट में चला गया। मैं बाघ को देख पा रहा था पर वो मुझे देख नहीं सकता था। मैंने रायफ़ल उठा ली। रायफ़ल पेड़ की डाल से टकरा गई। वह सतर्क हो गया। उसके कान खड़े हो गए। मैंने निशाना लगाया और चार राउंड गोली चला दी। बेचारा बेंत के झुरमुट में धाराशायी हो गया। मैंने उसकी पीठ पर दो कुहनी जमाई और बोला - क्यों रे, मुझे पहचाना नहीं? मैं मशहूर शिकारी पिंटू रंजन दास हूँ। हा हा हा
- बाबा तुम तो बड़े वीर हो।
- एक और बात सुन।
- एक और बात सुन। रॉबर्ट साहब शिकार कर लौट थे। कहीं से उन्हें खबर मिली। लौटकर मुझे खोजने लगे। हम रात 8 बजे जीप में निकले। जंगल में जा रहे थे। रायफ़ल भरी हुई थी। हमें आशंका थी कि कहीं से शेर या बाघ अचानक हम पर कूद ना पड़े, और ऐसा ही हुआ। और सच में बीच रास्ते एक भीमकाय आकर खड़ा हो गया। हाँफ रहा था। जीभ चाटने लगा। रॉबर्ट साहब कांपने लगे। मैंने कहा - डरो मत साहब, मैं पिंटू दास हूँ। मैंने गोली दाग दी। रॉबर्ट साहब मेरी पीठ थपथपाने लगे - शाबाश मिस्टर दास, शाबाश।
- बाबा तुमने कितने डाकुओं को मारा है?
- बताता हूँ सुन, उस समय मैं पुलिस ऑफिसर था। नयागढ़ में मेरी पोस्टिंग थी। उस समय उस इलाके में लखन सिंह नाम का एक डाकू आतंक मचा रहा था। मुझे एस. पी. साहब ने बुलाकर कहा - इंस्पेक्टर पिंटू दास मुझे तुमपर भरोसा है। लखन सिंह को पकड़ सकते हो? मैं पीछे हटने वालों में नहीं था। एक बटालियन के साथ उसके अड्डे पर धावा बोल दिया। साला भागने लगा। मैंने गोली चला दी। उसके जांघ में लगी। वो गिर गया। और मुझे गोल्ड मैडल मिला।
- बाबा वो गोल्ड मैडल कहाँ है?
- अरे मूर्ख वो गोल्ड मैडल क्या मैं रखता? मैंने एक गरीब को दे दिया।

पिन्टू दास को आज ऑफिस की घटना याद आ गई। सेक्शन ऑफिसर का चेहरा। सुनो दास बाबू , ऑफिस में कुछ काम नहीं करते हो, बस ऊँघते रहते हो।

- सर मैं ऊँघ नहीं रहा, सर झुकाये बैठा हूँ।
- मैं देख रहा हूँ, तुम ऊँघ रहे हो। ऑफिस में कौन ऊँघता है?
- बिलीव मी सर, मैं ऊँघ नहीं रह। सर झुकाये बैठा हूँ।
- ज़बान लड़ाकर तुम ऑथारिटी का अपमान कर रहे हो। इसका परिणाम क्या होगा जानते हो? तुमसे एक्सपिलिनेशन मांगा जाएगा। तुम सस्पेंड किये जाओगे। प्रॉसिक्यूशन किया जाएगा। चार्जशीट में लिखा जाएगा कि तुमने मुझे गाली दी है। मुझ पर जूता फेंका है।
- पर सर मैंने तो ये सब नहीं किया है।
- तुमने बिल्कुल किया है।
- नहीं सर मैंने नहीं किया है।

- पूछो ऑफिस में लोगों से। अरे ओ महापात्र बाबू, क्या मेरी तरफ जूता फेंका नहीं गया था?
- जी सर, जूता आपके बांये गाल पर लगा है। मैंने अपनी आंखों से देखा है। मैं कभी गलत नहीं देखता सर।
- महांती बाबू, इसने मुझे गाली नहीं दी?
- जी सर, ऐसी गंदी गाली मैंने अपने पूरे जीवन में नहीं सुना। इन्होंने आपके मुंह पर थूका भी। आपने देखा नहीं।
- मैं आपके पैर पड़ता हूं सर। आपके सामने सर झुकाता हूँ। मैं मिट्टी में मिल जाऊंगा सर। मुझ पर दया कीजिये सर। मेरे बाल बच्चे मर जायेंगे सर। मैं रास्ते का भिखारी बन जाऊंगा सर। मुझ पर दया कीजिये सर।
  टीमन ने ऊंची आवाज में पूछा
- बाबा तुमको नदी में तैरना आता है?
- खाली नदी क्या? मैंने तो महानदी भी तैर कर पर की है। उस समय मैं गणिया में बी. डी. ओ. (ब्लॉक डेवलेपमेन्ट ऑफिसर) था। बाढ़ आई हुई थी। मैं रिलीफ बांटने गया था। मेरी जीप नदी के किनारे किनारे जा रही थी। मैंने देखा एक आदमी बीच नदी में बहता जा रहा था। आदमी मदद के लिए चिल्ला रहा था। कोई उसे बचाने नहीं जा रहा था। मैं पानी में कूद पड़ा। तैरते तैरते उसके पास पहुंचते तक वो दो बार डूब चुका था। अपनी जान बचाने के लिए उसने मेरी गर्दन पकड़ ली। मैंने बड़ी मुश्किल से उसे पार लगाया। सुनो टीमन, इंसान का साहसी होना ज़रूरी है। डरपोक आदमी जीवन में कुछ नहीं कर सकता है। वह कभी तरक्की नहीं कर सकता है।
  पिन्टू दास तैराकी सीखना चाहता था पर सीख नहीं सका। तालाब मविन भी कभी गहरे पानी में नहीं जाता।
- बाबा तुम पहाड़ चढ़ना जानते हो?
- अरे ये तो मेरे बचपन की बात है। उस समय मैं स्काउट में था। हमारा हिमालय पर चढ़ने का कार्यक्रम था। हम पहले देहरादून नामक एक जगह पर पहुंचे। वहां से हम नेपाल में काठमांडू गए। रोड मैप के जरिये हम हिमालय पर पहुंचे। पहले तीन हजार फुट ऊपर कैम्प किया। उसके बाद पांच हजार फुट पर। उसके बाद जो बड़े बड़े पत्थर गिरे कि मत पूछो। हम सिर्फ रस्सी के सहारे लटके हुए थे। एक जगह में क्या हुआ, एक पत्थर पर काई जमी थी। कैसे चढ़े समझ ही नहीं आ रहा था। रस्सी के सिरे पर लोहे के अंकुश को बाँध कर ऊपर फेंका। अंकुश पत्थर पर जा अटका। रस्से को खींच कर जोर से पकड़ा। पता चला, मजबूत हूँ। फिर प्रश्न उठा पहले कौन चढ़ेगा? मैंने कहा - मैं चढ़ाऊंगा। रस्से को पकड़ कर मैं ऊपर चढ़ा। फिर एक एक कर सब चढ़ गए। आखिर में मेरा पैर संभल न सका। मुड़ गया। देखता नहीं पैर कैसे लूला हो गया है।
  पिंटू सर का बायां पैर लूला है। थोड़ा लंगड़ाकर चलते हैं। बचपन में अमरूद के पेड़ से गिर कर जो हालात हुई है, इसका जिक्र दादाजी बार - बार गाँव वालों से करते रहें हैं।
- बाबा तुम पुलिस बने, बी डी ओ बनकर तैरकर नदी पार किये, स्काउट में हिमालय भी चढ़े, पर कभी कार रेस में भाग ना लिया होगा। टी वी पर दिखाते हैं, कैसे सांय - सांय कर कार हवा में उड़ने लगती है। तुम चला नहीं पाओगे। हम कार कब लेंगे बाबा?
  पिंटू दास के खटारा सायकल की पुरानी ट्यूब हमेशा पावरलेस। तीन - तीन डबल पैच। कें- कें- कें- कें- ।
- अरे टीमन हम कार लेंगे। कार कौनसी बड़ी चीज है? मैंने कार रेस में कभी भाग नहीं लिया। पर अस्सी नब्बे से कम तेज नहीं चलता। स्टीयरिंग पकड़ते ही कार हवा में। एक बार हमारे गांव में मिनिस्टर आये थे। उनका ड्राइवर शराब के नशे में धुत्त। मिनिस्टर गुस्से में लाल पीले हो रहे थे। मैंने उनकी कार चलाई। दो घंटे में राजधानी पहुंचा दिया। मिनिस्टर की पत्नी घर में उनकी प्रतीक्षा में परेशान हो रही थी। मिनिस्टर ने अपनी पत्नी को मेरे बारे में बताया। मेरा परिचय कराया। मिनिस्टर की पत्नी ने मुझे कॉफी पिलाना चाहा। पर मैंने मना कर दिया। बाद में कितनी ही बार मुझे बुलाया। मैं जाता तो मुझे बहुत कुछ देते, पर मैं गया ही नहीं।

- बाबा तुम कुएं में जा सकते हो? गहरा कुआं बाबा, बहुत गहरा कुआं। तुम जा सकते हो?

  सुलोचना बेटे के लिए दूध दे गई। क्या उसने सुना होगा? सुनने दो। झूठ होकर भी ये सारी बातें बढ़ते बच्चों को साहसी बनाएंगी। वह एक दिन एक साहसी पुलिस अफसर बन सकता है। हो सकता है वो एक दिन खाली पैर हिमालय चढ़ जाए। उसे इस उम्र में साहस देना जरूरी है। उसका पिता जीवन भर एक छोटा बाबू ही बना रहा। तो क्या वह भी बड़ा होकर बाबू बने? बड़ा होकर ना जाने क्या बने? काम छोटा हो या बड़ा, नाम कमाना जरूरी है।
- बाबा, बाबा तुम गहरे कुएं में नहीं जा सकते ना?
- अरे जिंदगी में कितने ही कुओं में उतर कर चीजें निकाली है। पहले में कुएं में उतरने का काम ही तो करता था। गांव में किसी भी कुएं में कुछ भी गिर जततो मैं झट उतर कर निकाल देता। एक बार राजा का दस तोले का हार गिर गया। राजा बहुत उदास हो गए। यह ऐसा वैसा हार नहीं था। यह हार राजा नरसिंह मर्दराज को अपने पिता मकरध्वज सिंह से मिला था। मकरध्वज सिंह को नटवर सिंह से मिला था। हार का इतिहास था। इतना पुराना हार कुएं में गिर जाए, ऐसा कैसे हो सकता था? राज परिवार की बात थी। मुझे खोजना पड़ा। मुझे खोज निकाला। मुझे अपना स्नेहभाजन बनाकर पेड़ से निकाला हुआ बड़ा सा नारियल भेंट दिया। अपनी माँ से पूछ, उसने देखा है।

  हवाई जहाज आसमान में उड़ता है। पिंटू दास ने कई बार गांव के आसमान में जेट प्लेन को उड़ते हुए देखा है। पर कभी नज़दीक से उसे देखने का अवसर उसे नहीं मिला। पर अपने बेटे को पायलट बनाने की छोटी सी इच्छा ज़रूर है।
- टीमन तूने कभी हवाई जहाज देखा है?
- हाँ बाबा कई बार देखा है।
- मैं भी कभी युद्ध विमान का पायलट हुआ करता था। जानते हो?
- तुमने युद्ध किया है बाबा?
- हा:, हा:, हा:। भारत पाकिस्तान के युद्ध की बताता हूँ सुन। उस समय लाल बहादुर शास्त्री प्रधानमंत्री थे। उन्होंने जय जवान, जय किसान का नारा लगाया था। मैं पठानकोट घाटी में पायलट था। हमें सतर्क रहने के आदेश मिले थे। दुश्मन किसी भी पल हमला कर सकता था। सतर्क रहो। सच में दो दिन के भीतर ही पांच बम बरसाने वाले जहाज घाटी में आ गये। राडार ने वार्निंग दी। हमारे पास बड़ी बड़ी तोप थी। हमने तोप चला दी। दो जहाज जल कर राख हो गए। हमारे स्क्वार्डन लीडर हरकत सिंह राणे ने आदेश दिए। हमने दुश्मन पर पलट वार किया। दुश्मन का पीछा किया। उनके देश की सीमा में जाकर उनको डरा दिया। आखिर में उनके एक शहर पर बम डालकर हम वहाँ से छू मंतर हो गए। लाख कोशिशों के बावजूद वे हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सके।

  स्वाधीनता दिवस के दिन मुझे वीरचक्र की उपाधि दी गई। लाल बहादुर जी ने पूछा - बाबू तुम्हारा घर कहाँ है? मैंने कहा - जी मैं हरिपुर और दनेईपुर के बीच कंटाबाड़ का पिंटू दास। हालाँकि मैंने ये सारी बातें किसीको नहीं बताई, अपनी बात खुद बताकर क्या फायदा?

  थोड़ा रुक कर पिन्टू दास ने पूछा - अच्छा टीमन तू बड़ा होकर क्या बनेगा?

  टीमन ने थोड़े समय सोचा और बोला - बाबा, बाबा मैं बड़ा होऊंगा तो मेरा एक बेटा होगा। मेरा बेटा होगा तो मैं उसे सुंदर - सुंदर झूठी कहानियाँ सुनाऊंगा। डाकू और पुलिस ऑफिसर की कहानी। गणिया में बी. डी. ओ. की तैराकी की कहानी। हिमालय की कहानी। युद्ध की कहानी। और, और कितनी ही झूठी कहानियाँ।

कुकुरमुत्ता

बच्चपन की कुछ यादों को हम कभी नहीं भूल पाते हैं, चाहे कितना भी समय क्यों न बीत जाए। बहुत खुशी होती है जब वह यादें पुनः हमारे जीवन मे लौट आती हैं। ऐसी ही एक याद मेरी जिंदगी में लौट आयी बहुत दिनों के बाद जो मुझे मेरी सहेली भारती ने दिलायी।

कहते है, बच्चे मन के सच्चे। उनको जो चीज पसंद आती है वह उसे अपने दिल में बसा लेते हैं। बच्चपन में मेरी हालत भी कुछ ऐसी ही थी। भारती मुझ से तीन साल बड़ी है। बचपन से ही हम साथी है। उस पर मेरा बहुत विश्वास था। उसकी हर एक बात में मानती चाहे वह सही हो या गलत। जिसकी वजह से मुझे घर ओर बाहर, हर तरफ से डांट पड़ती थी। लेकिन मुझे इससे कोई फरक नहीं पड़ता था क्योंकि वह एकमात्र सहेली थी जिसे में अपनी हर बात कहती और वो सुनती। जबकि हमारा परिवेश कुछ ऐसा है कि यहां लोग अपनी बात दूसरे को कह तो सकते है लेकिन दूसरों की बात सुनने के लिए किसी के पास समय नहीं होता। तो फिर वह मुझे कैसे पसंद न आती? हालांकि उस समय मेरा दिमाग इतना विकसित नहीं हुआ था, लेकिन फिर भी वो मुझे पसंद थी। वह मुझे हँसाती, चिढ़ाती ....जो मुझे अच्छा लगता फिर मैं उसे कैसे छोड़ सकती थी।

एक दिन वो मुझसे आकर कहती है कि "पिंकी कुकुरमुत्ता ना भगवान है उसे पूजने से सारी मनोकामना पूरी होती है। और हमें उसे पूजना चाहिए"। अब छोटे से दिमाग मे इतनी बुद्धि कहाँ की वो उसे झूठ या अंधविश्वास मान सके। उसने कहा और मैंने मान लिया। उसके अगले दिन से हम दोनों मेरे घर के पीछे जाते और धूप, भोग लगा कर उसकी रोज पूजा करते थे। उसका तो पता नहीं लेकिन मेरी कुछ इच्छा पूरी होने लगी थी। और इस पर मेरा विश्वास बढ़ता गया। इस बात का पता हमारे अलावा और किसी को नहीं था। और इस सब का जुगाड़ वही किया करती थी। मैं तो बस उसके साथ जाती और वो जो कहती मैं वही करती।

एक दिन ऐसा समय आया जब इसका अंत भी हुआ। बारिश की मौसम का आगमन हुआ। बारिश के मौसम में घर से बाहर जाना मुश्किल था तो फिर उस कुकुरमुत्ते की कौन पूजा करने जाता। ऐसे ही समय बीतता गया और उस कुकुरमुत्ते की यादें भी मिटती चली गयी। बच्चे से बड़े होते गए। भारती ने भागकर शादी करली। वो अपने गृहस्थ जीवन मे व्यस्त हो गई और मैं अपनी पढ़ाई में। लेकिन हमारा मिलना, बात करना कम न हुआ। और एक दिन मेरी बीसवीं सालगिरह पर वो जब एक कुकुरमुत्ता लेकर मेरे घर आई तो मैं चौंक गयी। लेकिन मैं खुश भी थी। मुझे अतीत की वो बातें याद आगई। वो मेरी माँ को कुकुरमुत्ते की कहानी सुनाकर खुश होती और मैं अपनी बेवकूफी को याद करके। आज हम बड़े हो गए हैं। बचपन की वो मासूमियत हमारे अंदर नहीं रही। मैं जब भी उन दिनों को याद करती हूँ चहरे पर एक मुस्कुराहट आ जाती है। आज मैं बडी हो गई हूँ, और कुकुरमुत्ते वाली बात बचकानी लगती है, पर इच्छायें और उन्हें पूरा करने की इच्छा ना बचकानी है और ना ही मरी है ।

पिंकी सिंह, +3 **द्वितीय वर्ष**

राष्ट्रभाषा हिंदी

राष्ट्रभाषा शब्द बड़ा व्यापक और सर्वसमावेशी है। राष्ट्रभाषा की संकल्पना में मातृभाषा , राज्यभाषा या प्रादेशिक भाषा, संपर्क भाषा तथा राजभाषा आदि का सहज समाहार है। राष्ट्रभाषा को लोकभाषा या "लिंगवा फ्राका" भी कहा जा सकता है। जिस भाषा का प्रयोग संपर्क और अन्य व्यवहार मे समस्त राष्ट्र के अधिक से अधिक लोग करते है, लिख, बोल, समझ सकते है, और जो भाषा राष्ट्र की पहचान हो, उसे राष्ट्रभाषा कहते है।

राष्ट्रभाषा का संम्बंध राष्ट्र की परंपरा, संस्कृति तथा सभ्यता से जुड़ा होता है। राष्ट्र के ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय आवश्यकता के रूप में राष्ट्रभाषा विकसित होकर पनपती है। बहुभाषी राष्ट्र में उस राष्ट्र की केंद्रीय भाषा राष्ट्रभाषा के रूप में विकसित हो कर स्थापित हो जाती है।

राष्ट्रभाषा के गुणों में मुख्य रूप से सरलता, सुगमता, स्पष्टता, संचार सुलभता, सर्वग्राह्यता तथा लोकप्रियता आदि की गणना की जा सकती है। वह राष्ट्रीय चेतना, राष्ट्रगौरव तथा राष्ट्रीय एकता के अविभाज्य अंग के रूप में प्रतिष्ठित होती है। राष्ट्रभाषा केवल देश की अपनी ही कोई भाषा हो सकती है, विदेशी भाषा नही ।

बहुभाषी भारतवर्ष में संपर्क सूत्र के रूप में ही हिंदी को राष्ट्रभाषा होने का गौरव प्राप्त है। भाषिक एकता, समानता, और महात्म्य बनाये रखने के लिए हमारे संविधान में भारत की प्रमुख 22 भाषाओं को राष्ट्रीय भाषाओं का दर्जा दिया है।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने सन 1917 में भारत की राष्ट्रभाषा के बारे में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा है कि "किसी भी भाषा में राष्ट्रभाषा बनने के लिए निम्नलिखित गुण जरूर होने चाहिए" -

◆ उसे सरकारी कर्मचारी आसानी से सिख सकें।

◆ वह समस्त भारत में धार्मिक, आर्थिक, और राजनीतिक संपर्क के माध्यम के रूप में प्रयोग के लिए सक्षम हो।

◆ वह अधिकांश भारतीयों द्वारा बोली जाती हो।

राष्ट्रभाषा की विशेषता-

● सरल और सहज होनी चाहिए :-

सब के लिए वह भाषा सरल होनी चाहिए । यह जरूरी है कि भारतवर्ष के बहुत से लोग उस भाषा को बोलते हो। उस भाषा के द्वारा भारतवर्ष का अपनी धार्मिक, आर्थिक, और राजनीतिक व्यवहार होना चाहिए। राष्ट्र के लिए वह भाषा आसान होनी चाहिए ।

● अधिकांश लोगों को समझ में आनी चाहिए :-

किसी भी सभ्य समाज में या राष्ट्र में विचार-विनिमय के लिए एक ऐसी भाषा की जरूरत होती ही जो संम्पूर्ण समाज या राष्ट्र में समान रूप से समझी और बोली जाए। साथ ही सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक दृष्टि से इसका बिशेष महत्व है। भारत में ही नहीं विदेशों में भी इसके प्रयोक्ताओं की संख्या बहुत अधिक है।

● पूरे राष्ट्र का पहचान हो :-

भाषा के नाम पर राष्ट्र में सबसे बड़ी चुनौती है। हमारी राष्ट्रीय पहचान भाषा से ही बनती है । इस देश की कोई राष्ट्रीय भाषा हो सकती है वह हिंदी है। क्यों कि वह हिंदुस्तान की सब से बड़े भू-भाग में बोली जाती है, समझी जाती है । भारतीय भाषाओं के बीच में एकता का कोई सूत्र बन सकता है वह हिंदी के माध्यम से बन सकता है ।

● जीवन मे हर क्षेत्र में हम इस भाषा का प्रयोग करना चाहिए :-

उच्च शिक्षा में हिंदी को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। विज्ञान हो या तकनीकी क्षेत्र हो, ये तमाम विषय हिंदी के माध्यम से पढ़ाये जाए। सरकारी विभागों में भी हिंदी का प्रयोग हो रहा है। अगर निम्न कर्मचारी या अधिकारी को टिप्पणी अंग्रेजी में लिखने के लिए बोला जाए और उसको अंग्रेजी नहीं आती हो तो हिंदी में उस्के द्वारा लिखे गये टिप्पणी को स्वीकार करना पड़ता है। अगर कोई नेता या मंत्री को अंग्रेजी न आती हो तो उनके लिए हिंदी अनुवादक रहते हैं और अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद करते हैं।

भारतीय भाषाओं में केवल हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जिसमे उपर्युक्त सभी गुण है। फलतः स्वतंत्रता आंदोलन से लेकर आज तक राजनीतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक तथा सामाजिक आदि सभी स्तरों पर हिंदी ही राष्ट्रभाषा के रूप में जनमानस पर विराजमान है।

लिज़ा मिश्र, +3 **द्वितीय वर्ष**

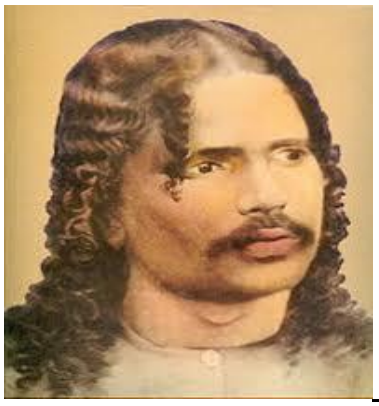

भारतेंदु हरिश्चंद्र

भारतेंदु हरिश्चंद्र का जन्म 1850 में काशी के एक प्रतिष्ठित वैश्य परिवार में हुआ। उन के पिता गोपालचंद एक अच्छे कवि थे और गिरिधर दास नाम से उपन्यास एवं कविता लिखा करते थे। भारतेंदु जी के अल्पावस्था में ही उनके माता पिता का देहांत हो गया था अतः स्कूल शिक्षा प्राप्त करने में भारतेंदु जी असमर्थ रहें। घर पर रह कर हिंदी, मराठी, बंगाल, उर्दू तथा अंग्रेजी का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया ।

भारतेंदु जी को काव्य-प्रतिभा अपने पिता से विरासत के रूप में मिली थी।

पंद्रह वर्ष की अवस्था से ही भारतेंदु ने साहित्य सेवा कवि वचन सुधा नामक पत्र निकाला जिसमें उस समय के बड़े -बड़े विद्वानों की रचनाएं छपती थी। साहित्य सेवा के साथ - साथ भारतेंदु जी की समाज सेवा भी चलती थी उन्होंने कई समस्याओं की स्थापना में अपना योग दिया।

रचनाएँ

* भारतेंदु कृत काव्य - ग्रंथों में दान-लीला, प्रेम तरंग, प्रेम प्रलाप, कृष्ण चरित्र आदि उनके भक्ति संबंधित काव्य हैं।

* सतसई श्रीनगर, होली मधु मुकुल आदि श्रृंगार प्रधान रचनाएँ है ।

* भारत वीरत्व , विजय- वैजयंती , सुमनांजली आदि उनकी राष्ट्रीय कविताओं के संग्रह है। बंदर सभा, बकरी का विलाप प्रधान काव्य कृतियां हैं।

महत्वपूर्ण कार्य

आधुनिक हिंदी साहित्य में भारतेंदु जी का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। भारतेंदु बहुमुखी प्रतिभा के स्वामी थे। कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास, निबंध आदि सभी क्षेत्रों में उनकी देन अपूर्ण है। भारतेंदु जी हिंदी में नव जागरण का संदेश ले कर अवतरित हुए। उन्होंने हिंदी के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण कार्य किया ।

भाव, भाषा और शैली में नवीनता तथा मौलिकता का समावेश करके उन्हें आधुनिक काल के अनरूप बनाया। आधुनिक हिंदी के वे जन्मदाता माने जाते हैं। हिंदी के नाटकों का सूत्रपात भी उन्हीं के द्वारा हुआ। भारतेंदु जी अपने समय के साहित्यिक नेता थे। उनसे कितने ही प्रतिभाशाली लेखकों को प्रेरणा मिली। मातृ भाषा की सेवा में उन्होंने अपना जीवन ही नहीं सम्पूर्ण धन भी अर्पित कर दिया। हिंदी भाषा की उन्नति उनका मूलमंत्र था।

“निज भाषा उन्नति लहै सब उन्नति के मूल ।बिन निज भाषा -ज्ञान के मिटे न हिए को शूल।“

अपनी इन्हीं विशेषताओं के कारण भारतेंदु हिंदी साहित्य के एक दैदीप्यमान नक्षत्र बन गए और उनका युग भारंतेन्दु युग के नाम से प्रसिद्ध हुआ ।

निहारिका, +3 प्रथम वर्ष

रीतिमुक्त कवि घनानन्द

'रीतिमुक्त' का सीधा अर्थ यही है कि यह धारा रीति-परंपरा के साहित्यिक बंधनों और रूढ़ियों से मुक्त है। इस धारा को 'रीतिमुक्त' के साथ साथ कुछ लोग 'स्वच्छंद' काव्यधारा भी मानते हैं। रीतिमुक्त प्रवृत्ति का कवि अंतर्मुखी होता है। उसे अपनी अनुभूती पर अधिक विश्वास रहता है। संसार का अनुभव करने वाले व्यक्ति की अपेक्षा अपना अनुभव करने वाला व्यक्ति उसकी दृष्टि में अधिक सच्चा और प्रामाणिक है। स्वच्छंदतावादी साहित्य में अभिनवत्व(ताज़गी) रहता है, क्योंकि उसकि प्रेरणा जीवन से मिलती है। रीतिमुक्त काव्यधारा के विकास में घनानंद का योग दान मुख्य रुप से उल्लेखनीय है।

घनानंद -

घनानंद स्वच्छंद काव्यधारा के प्रमुख कवि हैं। इस धारा के प्रायः सभी गुण इनकी शैली में मिल जाते है, जैसे भावात्मकता, वक्रता, लाक्षणिकता, भावों की वैयक्तिकता, रहस्यात्मकता, मार्मिकता, स्वच्छंदता आदि। इनकी दो प्रकार की रचनाएं उपलब्ध हैं, जिनका संबंध क्रमशः लौकिक शृंगार औऱ भक्ति से है। प्रथम वर्ग की रचनाएं प्रायः कवित्त-सवैयों में रचित हैं और दूसरे वर्ग की पदों एवं दोहे-चौपाइयों में। अब तक प्राप्त कविता की संख्या - 752, पदों की संख्या - 1057 और दोहे-चौपाइयों कि - 2354 है।

काव्य-सौंदर्य के अतिरिक्त रचना-विस्तार कि दृष्टि से भी घनानंद महाकवियों में गिने जाने योग्य हैं। इनके काव्य में ऋजु औऱ वक्र दोनों प्रकार की शैलियों का प्रयोग मिलता है और भाव कवि के व्यक्तिगत अथवा स्वच्छंद हैं, काव्य परंपरा के नहीं। भावों में विषाद और निराशा का प्राचुर्य है। कवि प्रेम की पराजय में भी अड़िग है, अतएव उसे विजयी कहा जायेगा। यह विषाद उसके

अभिलाषातिरेक का परिणाम है। प्रेम की यह विषादमयी अनुभूति हिंदी-सहित्य की परंपरा के प्रतिकूल औऱ फ़ारसी-परंपरा के अनुकूल है। काव्य-शैली में वर्ण्य का उपयोग दो प्रकार का है- भाव-लपेटी वस्तु का स्वरूप खड़ा करके या फिर वस्तु से उठे भावों का सीधा वर्णन करके। हिंदी-संस्कृति की परंपरा विभावप्रधान रही है, पर घनानंद ने दूसरा मार्ग अपनाया है, अर्थात भावों का सीधा वर्णन अधिक किया है। इन भावों में रीझ, विषाद, उलझन, अभिलाषा, भूल, उपालंभ आदि प्रमुख हैं। इन भावों के आश्रय है- मन, प्राण, नेत्र तथा अन्य ज्ञानेंद्रियां। इन ज्ञानेन्द्रियों को भाव का आश्रय बनाकर कवि ने व्यक्त किया है-

" एक ही जीव हुतौ सुतौ वारयौ,
सुजान संकोच औ सोच सहारियै।
रोकी रहै न दहै घनआनंद
बाबरी रीझ के हाथिन हारियौ।।"

इस प्रकार वियोग-व्यथा कि सैकड़ों अंतर्दशाओं के मार्मिक चित्र कवि ने खिंचे हैं, जो हृदय को सीधे छूते हैं। घनानंद जी के प्रेम का उदय अवश्य सुजान के शरीर से हुआ था, पर उसकी परिणति सुजान (सु+ज्ञान) परमेश्वर में हुई थी। उनकी शैली उत्तम पुरूष-प्रधान आत्मनिवेदन की है। प्रेम की अनुभूतियों को इन्होंने अपना बना कर प्रस्तुत किया है। अपनी रचनाप्रक्रिया का संकेत करते हुए कवि ने स्पष्ट कहा है कि उन्हें काव्य की प्रेरणा प्रेयसी सुजान के मादक रूप से मिलती है, उसी को वह काव्य के रूप में उपस्थित कर देते हैं। इस प्रकार के संकेतों से अनुमान होता है कि कवि का काव्य उनकी स्वयं की प्रेमानुभूति है। रीतिकाल के लिए यह नवीन प्रणाली है।

घनानंद जी के भाव असाधारण है। उन्हें अभिव्यक्त करने के लिए असाधारण भाषा का प्रयोग ही एकमात्र उपाय है। ऐसा लगता है कि भावों का जन्म ही इस प्रकार कि वक्र भाषा में हुआ है। इस प्रकार लाक्षणिक भाषा का प्रयोग करना उनकी शैली है, जिसके परिणाम स्वरूप उसमें विरोध और वक्रता-ये दो गुण आ गये हैं। उनकी सर्वाधिक उल्लेखनीय गुण भाषा का लाक्षणिक प्रयोग है। घनानंद ने लक्षण का मार्ग अपनाया। मुहावरे भी प्रायः लक्षण के रूढ़ प्रयोग होते हैं । अतः इनकी भाषा में उनका भी प्रचुर प्रयोग मिलता है। लक्षण का ऐसा प्रयोग रीतिकाल के लिए सर्वथा नया प्रयास है। उस समय के आचार्यों ने प्रसंगवश अभिधा आदि वृत्तियों का विवेचन किया है। संस्कृत में तो इस पर ग्रंथ के ग्रंथ लिखे पड़े है, पर लाक्षणिक भाषा का प्रयोग न संस्कृत भाषा में मिलता है और न हिंदी के पूर्ववर्ती काव्यों में। सूर, तुलसी आदि भक्त कवियों की वाणी में अवश्य उसके कहीं-कहीं दर्शन जरूर होते हैं। इसका कारण अलंकार-परंपरा का आभाव है।

सस्मिता महांति, +3 प्रथम वर्ष

जो मां ना होती

जो मां ना होती, तो क्या होता?
सबसे पहले ये संसार ना होता
ममता की बरसात ना होती,
प्यार की कोई बात ना होती,
मां से बढ़ कर धीरज किसका?
है सारे जग में तेज़ उसका
उसके तन से काया ढलती है,
ममता की छाया में औलाद पलती है
मां की छवी कैसी न्यारी
सब बातें उसकी प्यारी प्यारी,
दर्द सभी वो सह लेती है,
दान जीवन का वो देती है,
वो जननी है दुख हरणी है,
आँखों में आँसू जब आते हैं,
हाथ मां के सहलाते हैं,
भगवान का एक वरदान है मां,
हमारी ही पहचान है मां,
कभी दिल उसका जो रो उठता है,
धीरज भी जब खो उठता है,
मन को वो समझा लेती है,
ममता की चादर में आँसू सारे छुपा लेती है,
आज ज़माना बदल गया है,
चमक दमक में सब ढल गया है,
कभी बचपन खुद का याद करो,
कुछ बीती बातें याद करो,
मां की खुशबू आयेगी,
बहा तुम्हें ले जायेगी,
होती है क्या प्यार की बारिश,
सब कुछ हमें बतायेगी,
ना दुखे कभी किसी मां का दिल,
ये वादा ही तो करना है,
अपनी मां के चरणों में,
सर को ही तो धरना है,
ममता का कोई मोल नहीं,
बिन मांगे मिल जाती है,
मां का भी कोई तोल नही,
पीछे दुनिया रह जाती है|

हाफिज़ा, +3 प्रथम वर्ष

पानी

पानी तो अनमोल है
उसको बचा के रखिये
बर्बाद मत कीजिए इसे
जीने का सलीका सीखिए
पानी को तरसते है
धरती पे काफी लोग यहां
पानी ही तो दौलत है
पानी सा धन भला कहां।
शेविंग या कार की धुलाई
या जब करते हो स्नान
पानी की जरूर बचत करें
पानी से ही धरती महान।
जल ही तो जीवन है
पानी है गुणों की खान
पानी ही तो सब कुछ है
पानी है धरती की शान।
आने वाली पुश्तों का
कुछ तो हम करे ख्याल।
पानी के बगैर भविष्य
भला कैसे होगा खुशहाल
बच्चे, बूढ़े और जवान,
पानी बचाएं बने महान,
अब तो जाग जाओ इंसान
पानी में बसती है प्राण।

कादम्बिनी पण्डा, +3 प्रथम वर्ष

उठो, जागो और तब तक नहीं रुको जब तक लक्ष्य ना प्राप्त हो जाये

स्वामी विवेकानंद के जीवन के तीन प्रेरक प्रसंग

लक्ष्य पर ध्यान लगाओ

स्वामी विवेकानंद अमेरिका में भ्रमण कर रहे थे। एक जगह से गुजरते हुए उन्होंने पुल पर खड़े कुछ लड़कों को नदी में तैर रहे अंडे के छिलकों पर बन्दूक से निशाना लगाते देखा। किसी भी लड़के का एक भी निशाना सही नहीं लग रहा था। तब उन्होंने एक लड़के से बन्दूक ली और खुद निशाना लगाने लगे। उन्होंने पहला निशाना लगाया और वो बिलकुल सही लगा। फिर एक के बाद एक उन्होंने कुल 12 निशाने लगाये और सभी बिलकुल सटीक लगे। ये देख लड़के दंग रह गए और उनसे पुछा , ” भला आप ये कैसे कर लेते हैं ?”

स्वामी जी बोले, “तुम जो भी कर रहे हो अपना पूरा दिमाग उसी एक काम में लगाओ। अगर तुम निशाना लगा रहे हो तो तम्हारा पूरा ध्यान सिर्फ अपने लक्ष्य पर होना चाहिए। तब तुम कभी चूकोगे नहीं। अगर तुम अपना पाठ पढ़ रहे हो तो सिर्फ पाठ के बारे में सोचो। मेरे देश में बच्चों को ये करना सिखाया जाता है।”

डर का सामना

एक बार बनारस में स्वामी जी दुर्गा जी के मंदिर से निकल रहे थे की तभी वहां मौजूद बहुत सारे बंदरों ने उन्हें घेर लिया। वे उनके नज़दीक आने लगे और डराने लगे। स्वामी जी भयभीत हो गए और खुद को बचाने के लिए दौड़ कर भागने लगे, पर बन्दर तो मानो पीछे ही पड़ गए, और वे उन्हें दौडाने लगे। पास खड़ा एक वृद्ध सन्यासी ये सब देख रहा था, उसने स्वामी जी को रोका और बोला, ” रुको ! उनका सामना करो !”

स्वामी जी तुरन्त पलटे और बंदरों के तरफ बढ़ने लगे, ऐसा करते ही सभी बन्दर भाग गए। इस घटना से स्वामी जी को एक गंभीर सीख मिली और कई सालों बाद उन्होंने एक संबोधन में कहा भी – " यदि तुम कभी किसी चीज से भयभीत हो तो उससे भागो मत, पलटो और सामना करो।"

सच बोलने की हिम्मत

स्वामी विवेकानंदा प्रारंभ से ही एक मेधावी छात्र थे और सभी उनके व्यक्तित्व और वाणी से प्रभावित रहते थे। जब वो साथी छात्रों से कुछ बताते तो सब मंत्रमुग्ध हो उन्हें सुनते। एक दिन इंटरवल के दौरान वो कक्षा में कुछ मित्रों को कहानी सुना रहे थे, सभी उनकी बातें सुनने में इतने मग्न। थे की उन्हें पता ही नहीं चला की कब मास्टर जी कक्षा में आये और पढ़ाना शुरू कर दिया।

मास्टर जी ने अभी पढ़ना शुरू ही किया था कि उन्हें कुछ फुसफुसाहट सुनाई दी।

" कौन बात कर रहा है?" उन्होंने तेज आवाज़ में पूछा। सभी ने स्वामी जी और उनके साथ बैठे छात्रों किई तरफ इशारा कर दिया।

मास्टर जी तुरंत क्रोधित हो गए, उन्होंने तुरंत उन छात्रों को बुलाया और पाठ से संबधित एक प्रश्न पूछने लगे। जब कोई भी उत्तर न दे सका ,तब अंत में मास्टर जी ने स्वामी जी से भी वही प्रश्न किया। पर स्वामी जी तो मानो सब कुछ पहले से ही जानते हों, उन्होंने आसानी से उत्तर दे दिया।

यह देख उन्हें यकीन हो गया कि स्वामी जी पाठ पर ध्यान दे रहे थे और बाकी छात्र बात-चीत में लगे हुए थे। फिर क्या था उन्होंने स्वामी जी को छोड़ सभी को बेंच पर खड़े होने की सजा दे दी। सभी छात्र एक एक कर बेच पर खड़े होने लगे, स्वामी जी ने भी यही किया।

तब मास्टर जी बोले, " नरेन्द्र (स्वामी विवेकानंद) तुम बैठ जाओ।"

" नहीं सर, मुझे भी खड़ा होना होगा क्योंकि वो मैं ही था जो इन छात्रों से बात कर रहा था।" स्वामी जी ने आग्रह किया।

हाफिज़ा, +3 प्रथम वर्ष

श्रेय

लेखक :- श्री सुजित पंडा

अनुवाद :- डॉ. वेदुला रामालक्ष्मी

- रवि दिगाल के पैरों में जादू है।
- खेलते - खेलते अचानक बीच मैदान में ऐसे मारता है, सीधा गोल।
- बदमाश, पिछले जनम जरुर फुटबॉल खेलने वाले देश जन्मा होगा।
- जन्मा होगा? बोलो उस देश में खेला होगा।
- खेला होगा, खेला होगा।
- खेला होगा? कहो खेल रहा था।

कब का मुढ़ी खरीदने घर से निकला रंजन मुढ़ी खरीदना भूलकर मुँह बाये अपने मित्र की इस प्रशंसा को सुनने लगा।

''क्या खेलता है? नवीं कक्षा में दो साल से फेल हो रहा है। सुबह - सुबह मैदान चला जाता है। आधी हाँडी पखाल (पानी मिला बासी भात) खाकर बिना किताबों के सीधे स्कूल दौड़ता है। हम चाहते हैं तो क्या खेल नहीं सकते ? ये अलग बात है कि खेलते नहीं हैं, खेलते होते तो देखते बेटा।''

रंजन गाँव के पुजारी वासुदेव मिश्रा का बेटा है। पिता जैसा शांत गंभीर, पढ़ाई में अच्छा। ऐसे में एक गधे बच्चे की इतनी प्रशंसा वह कैसे सह सकता था। और उसकी ईर्ष्या की दूसरी वजह है सोरो।

सोरो को देखते ही पेट भर जाता है। और सोरो, पलट - पलट कर इस आसुरी पैर वाले रवि को देखती है। निर्लज!

रंजन के छाती में एक इच्छा ने गिरगिट की तरह अचानक सर उठाया। वह भी आज खेलेगा। खेलेगा जबरदस्त खेलेगा। रवि दिगाल नवीं कक्षा का कैप्टन है। वो साला हाँ बोले तो ना ! हाँ नहीं करेगा ? बिल्कुल करेगा। कैसे करेगा? बदले में कुछ देना होगा। शायद गणित की कॉपी। ठीक है, दिया जायेगा।

सामने से रवि दिगाल आ रहा है। सेनापति जैसी चाल है। रंजन ने उसके पैरों की तरफ देखा। उसके घर में सात पीढ़ियों पुराना जो शीशम का पलंग है उसके पैरों जैसी काली और मजबुत पिंडलियाँ है रवि की। इन्हीं पिंडलियों के सहारे पिछले साल उसने अपने स्कूल को सुब्रत कप फाइनल में पहुँचाया था। सब जानते हैं कि रवि जैसा खिलाड़ी आसपास के इलाके में नहीं है। यह बात रवि स्वयं भी जानता है। साथ ही वह यह भी जानता है कि सरोज बाग के डिफेंस को तोड़कर गोल करना इतना आसान नहीं है। सरोज बाग दसवीं कक्षा का कैप्टन है। कल शाम खेल मास्टरजी ने साफसाफ कह दिया था,

- ''जो टीम चैम्पियन होगा उसी का कैप्टन जगन्नाथ शर्मा उच्च विद्यापीठ का कैप्टन होगा।''

इन दोनों खिलाड़ियों के बीच जो भी कैप्टन होगा, वही उन्नीस वर्ष से कम भारतीय फुटबॉल टीम का कैप्टन होगा ऐसी संभावना है।

वजह, इन दोनों ने राष्ट्रीय दल में अपनी जगह बना ली है, और अपनी प्रतिभा के बल पर चयनकर्ताओं को मुग्ध भी कर दिया है।

राजधानी से 350 कि.मी. दूर एक छोटे से गाँव के विद्यालय के छात्रों की इस सफलता का श्रेय खेल शिक्षक हरि सर को जाता है।

आज रवि की सबसे बड़ी चुनौती है कि उसके दल के दो खिलाड़ी बीमार है। दोनों ही फॉरवर्ड स्ट्राइकर हैं। बीच सड़क पर रवि और रंजन का आमना - सामना हुआ।

- रंजन आज तू खेलेगा ? फॉरवर्ड स्ट्राइकर।
- खेल पायेगा ?

रंजन हँसा। हँसी का मतलब था तू क्या अकेला खिलाड़ी है? देख आज कितने गोल करता हूँ। तेरी हीरोपन्ती आज से खत्म। ये मेरा चैलेंज है। ऐसा नहीं है कि रवि ने रंजन के मन की बात समझी न हो, बल्कि वह खुश हुआ। जीतने के लिए इतना जिगर तो चाहिए ही। बोला-

- जल्दी मैदान में आ जाओ।

रंजन फिर उसी तरह हँसा। मतलब हाँ, हाँ, चल, आज फैसला हो जायेगा। रंजन मिश्रा सिर्फ पढ़ाई में ही नहीं खेल में भी माहिर है। बोला-

- रवि तू इस मोहल्ले क्यों आया है, मैं सब जानता हूँ।

इस बार हँसने की बारी रवि की थी। वह खिलखिलाकर हँसा। जैसे सारी खुशियाँ रवि के काले होठों और सफेद दाँतों से झरने लगी।

इस मोहल्ले में मही देहुरी का घर है। वह नवीं कक्षा का गोल कीपर है। रवि उसे बुलाने आया है। पर ये मात्र बहाना है। मही के घर से लगा हुआ घर सरोजिनी का। सरोजिनी मही की चचेरी बहन है। हर दिन मही के घर रवि के आने की वजह मही जानता है पर कुछ कहता नहीं।

इस उम्र से ही रवि ने जितना नाम कमाया है, भविष्य में यदि वह सोरो (सरोजिनी) से शादी करना चाहेगा तो इसमें नुकसान क्या है। रवि से योग्य लड़का क्या इस इलाके में मिलेगा ?

हालांकि मही यह नहीं जानता कि छोटी बहन की पसन्द को स्वीकारने या विरोध करने की अभिभावकीय उम्र उसकी है भी या नहीं। रवि और रंजन अपने अपने रास्ते निकल गये। रवि के होठों पर अभी भी वही हँसी है। रंजन भी कम खुश नहीं है।

- मही, निकल रहे हो ?

उत्तर की प्रतिक्षा किये बिना रवि मही के घर के पिछवाड़े तक पहुँच गया था। वहाँ खड़े होकर उसने चिल्लाते हुए कहा।

- जल्दी निकल, समय हो रहा है। याद नहीं, पिछले महीने टुर्नामेन्ट में समय से न पहुँचने की वजह से सर ने बड़केरा टीम को किस तरह वॉकआउट दे दिया था ?

इशारा एकदम सही था। पायल को छमछम बजाती हुई हाथों में कुछ जूठे बर्तन लिये हुए सोरो बाहर निकली। टगर फूलों के पेड़ के नीचे पानी की हांडी थी। उसी तरफ कुछ केले के पेड़ों का झुंड और बाँस के झुरमुट थे। टमाटर की बेल को उपर चढ़ाते हुए पत्थर पर बैठ गई सोरो। धीरे से रवि ने आवाज दी।

- सोरो !

- हूँ,
- खेल देखने आयेगी नहीं ?
- जाऊँगी नहीं ? ऐसा कभी हुआ है ?
- वो नीला वाला फ्रॉक पहनना।
- मेरे कपड़ों से तेरा क्या लेना देना? तू खेल में ध्यान दे।
- खेल में ध्यान देने का मतलब यह नहीं है कि मैं तेरा ध्यान न दूँ।
- तूझ से कौन मुँह लगाये। बदमाश।

  कुछ समय की चुप्पी के बाद।
- तेरा चेहरा उतरा हुआ क्यों है ?
- उतरा है तो उतरे। तू जा खेल। इतना कहकर बर्तन माँजना छोड़ हथेलियों से मुँह छिपाकर लजाते हुए भीतर चली गई।

  मही ने चिल्लाते हुए कहा।
- आ रे, मैं बाहर खड़ा हूँ तू वहाँ घर के पिछवाड़े में क्या कर रहा है ?
- आ रहा हूँ, इतना चीख क्यों रहा है।

  रवि तनकर आ खड़ा हुआ।
- देख मही रत्ना पर नजर रखना।
- नहीं फिर वैसी गलती न होगी।
- हमारा डिफेन्स अच्छा नहीं है, इसीलिए कह रहा हूँ।
- रत्ना अगरबत्ती की तरह दुबला पतला है। इतनी जोर से स्ट्राइक करेगा मैं सोच भी नहीं सकता था। इसिलिए ठगा सा रह गया।
- वही तो।
- कह तो रहा हूँ, रत्ना ने गोल किया तो मैं खेलना छोड़ दूँगा।
- भाग
- माता की कसम। तू मन लगा कर खेल। जो होगा देखा जायेगा। खेल छोड़ने की बात आई कहाँ से ?

  बातों बातों में मैदान आ गया, रंजन पहले ही मौजूद था। वह बहुत खुश था और बहुत जोश में भी। गाँव के और आसपास के गाँव के लोग भी आ चुके थे। सरोज बाग के पिता जो गाय चराते थे और मेले में मूँगफली बेचते थे, रवि दिगाल के पिता जिनकी चौक में ''माँ आदिमाता पान दुकान'' थी, अपने - अपने सामान को फैलाकर बैठ चुके थे। अर्पित दिगाल बोला।
- मुझे लगता है नवीं कक्षा जीतेगी।
- ''क्यों तेरा बेटा है, इसलिए। मैं तो कहता हूँ दसवीं कक्षा जीतेगी। जोर लगाते हुए बालाम्बर बाग ने कहा।
- कितने रुपये लगाता है ?
- आज जितने का बेचूँगा सब। और तू ?
- वही

  दोनों अपने - अपने विश्वास पर अड़े हुए थे और अड़े हुए थे रवि दिगाल और सरोज बाग। किसीने कहा।

- साला, स्कूल के खेल को देखने के लिए कितने लोग आये हैं।
- रवि और सरोज का खेल होता ही ऐसा है। ये सारे लोग इन्हीं के लिए आये हैं।

- साले। नाम रोशन करेंगे, पूरे इलाके का नाम रौशन करेंगे।
- सुना है देश के लिए चुन लिए गये हैं। थोड़ा बहुत भी खेल लेंगे तो, देखना अर्षित न गाय चरायेगा और न ही बालाम्बर पान बेचेगा।

अर्षित ने बालाम्बर की ओर देखा और बालाम्बर ने अर्षित को। इस दृष्टि में भविष्य के सपने न थे। था एक आवाहन —''देखें आज क्या होता है।'' प्रतिपक्ष भी यही कहता था ''हाँ देखते हैं।''

देखनहारियों का जमघट हो चुका था। खिलाड़ी कहाँ है? दसवीं कक्षा की टीम अब तक नहीं पहुँची।

- अर्षित बोला — डर गये क्या रे ?

बालाम्बर ने अर्षित को देखा और पान लगाते हुए मुँह मोड़ लिया। अर्षित को लगा उसे ऐसा नहीं कहना चाहिए था। चुप हो गया। लोग भी अब धीरे — धीरे बात करने लगे। मैदान के दक्षिणी छोर से सरोज ने प्रवेश किया। दसवीं की लड़कियों ने हुलहुली (उड़िशा में मांगलिक कार्यों के दौरान निकाली जाने वाली एक ध्वनी जो मुँह में जीभ के हिलाने से निकलती है) दी। सभी दर्शकों ने ताली बजायी। अब घमासान आरम्भ होगा।

सरोज उदास दिख रहा था एकदम उदास। सीधा खेल शिक्षक के पास आया।

- सर हमारा दल नहीं बन पा रहा है। 'ए' सेक्शन और 'बी' सेक्शन के बीच खींचातानी चल रही है। किस सेक्शन के बच्चे टीम में अधिक रहेंगे।
- तुमने समझाया नहीं ?
- जी सर, मैंने समझाया। मुझे छोड़ 'ए' से पाँच, 'बी' से पाँच लड़के हैं। 'बी' सेक्शन के लड़के कहते है 'ए' सेक्शन के लड़के अधिक है क्योंकि सरोज 'ए' सेक्शन का है।

थोड़ी चुप्पी के बाद फिर बोला।

- पर सर कोई समझ नहीं रहा है कि सरोज बाग न तो सेक्शन 'ए' का है और न सेक्शन 'बी' का। वह तो फुटबॉल का है। सर ने सर हिलाते हुए कहा।
- समाधान के लिए कोई नया फॉर्मुला निकालो। टीम कैप्टन बनना हो तो इन सभी मुश्किलों का हल निकालना ही होगा।

सरोज समझ गया, सर का मतलब यहाँ सिर्फ दसवीं कक्षा के नेतृत्व से नहीं है। वे भारतीय टीम के नेतृत्व की बात कर रहे हैं। आँखे और सर झुकाते हुए बोला, ''मैं देखता हूँ सर।'' पर उसकी हताशा उसकी आवाज में झलक रही थी।

- देखो, आधे घण्टे में टीम न आई तो नवीं कक्षा को वॉकओवर मिल जायेगा।
- कुछ लोग कौतुहल से उनके चारों ओर जम चुके थे।
- क्या हुआ ? क्या हुआ ?

सारे मैदान में यह खबर कानों कान फैल गई कि दसवीं के लड़के आपस में ही लड़ मर रहे हैं। दसवीं के छात्र एवं समर्थक शर्म से चुप हो गये। सरोज बाग सर झुकाये मैदान से जाने लगा, इतने में जोर से हुलहुली की ध्वनी आई, ये था नवीं की लड़कियों का कोलाहल जिसका नेतृत्व कर रही थी सोरो। आह, सरोज को लगा जैसे सौ सौ बिच्छु उसे डँक मार रहे हैं। दसवीं की लड़कियाँ मुँह मोड़ कर तरह - तरह की शाप देने लगी।

अर्षित ने बालाम्बर की ओर व्यंग्य भरी दृष्टि से देखा। उस दृष्टि को बालाम्बर सह न सका और भीतर ही भीतर सिमटता चला गया। सरोज ने पलटकर आँखों ही आँखों में कहा-

- मैं आ रहा हूँ।

इस बीच बादल का एक टुकड़ा बरस कर चला गया। फुटबॉल के लिये इससे अच्छा वातावरण क्या हो सकता था? नवीं कक्षा की टीम ने मैदान के एक छोर में अभ्यास शुरु कर दिया। रंजन मिश्रा सबसे अधिक उछल रहा था। मन ही मन सपने देखने लगा — ''वह अकेला बॉल को लिये आगे बढ़ रहा है। उसे कोई भी रोक नहीं पा रहा, सरोज बाग भी नहीं। तीस फुट की दूरी से बायें पैर से जोरदार कीक् और गोल।

उसके बाद एक कॉर्नर शॉट। बिना किसी की सहायता के बॉल ऊपर उछालते हुए सीधे गोल पोस्ट में और सारा मैदान तालियों की गड़गड़ाहट से गूँजने लगा।

और उसी दिन साँझ को अमर गौड़ के घर से दूध लाते समय अचानक सोरो ने हाथ पकड़कर एक सुनसान घर के पीछे खींच और उसके गाल पर एक चुम्बन, 'तुम कितना अच्छा खेलते हो।' और एक चुम्बन। रंजन काँपने लगा और दूध सोरो के गोरे देह पर झलकने लगा। वह लजाकर दौड़ते हुए चली गई और रंजन के चेहरे पर लाज भरी मुस्कान।

रंजन को पार कर बॉल जाने लगी। रवि दिगाल चिल्ला रहा था। किस दुनिया में है रे? इस तरह तो कप मिल चुका। रंजन होश में आया। चैम्पियन टीम की हर खिलाड़ी को एक एक छोटा कप मिलेगा। रंजन को रोमांच होने लगा। वह अच्छा खेले या खराब। रवि दिगाल है तो जीत पक्की। जति और पंचा गेरुए झंडे लिए लाइन मैन बन चुके थे। उनको पहले 'डाल हिला' कहा जाता था। कारण पताकाओं के अभाव में वे दोनो हरी पेड़ की डालियों को हिलाते थे। पिछले वर्ष सुब्रत कप फाइनल खेलने पर स्कूल को जो पुरस्कार मिला उसे दल का गेटअप बदल गया।

लोग बिरझने लगे। कितना इन्तजार करेंगे। धैर्य का बाँध टूटने लगा। बालाम्बर बाग का चेहरा काला पड़ने लगा। दसवीं की लड़कियाँ धीरे - धीरे जाने लगी।

मैदान की दक्षिण की ओर से पुन: सरोज का प्रवेश। सर झुका तो न था पर चेहरे पर खुशी न थी। मैदान में फिर से कोलाहल। लोग बातें करने लगे, 'इस बार होगा, खेल जरुर होगा।' लक्षण दर्जी जिसने आज बत्तीस वर्षों में कभी दुकान बंद नहीं की थी, विलासिनी बेहरा जो विधवा होने के बाद मेले, उत्सव और पर्व नहीं गई वे भी आज खेल देखने बैठे थे।

सरोज आया, हाथ जोड़े उदास और लाचार स्वर में बोला।

- वॉकओवर दे दीजिये सर मैं, लाचार हूँ।

एक लम्बी साँस लेने के बाद आधे मैदान में कोलाहल और आधे मैदान में चुप्पी पसर गई। रंजन के नेतृत्व में नवीं कक्षा के लड़के चिल्लाने लगे। नवीं कक्षा जिन्दाबाद, हिप हिप..... । इस विचित्र कोलाहल में रवि दिगाल को एक करुण स्वर सुनाई दे रहा था — जैसे सरोज बाग के सीने में एक फुटबॉल सुन्दरी उदास, लाचार टुटी हुई रो रही थी। सरोज पलटकर जाने लगा और उसके बनावटी हँसी के झरोखे से उसकी छाती के भीतर का वह करुण दृश्य दिख रहा था।

खेल शिक्षक ने हाथ उठाकर सब को शांत रहने का संकेत दिया। आसमान की ओर देखा। वॉकओवर देना उन्हें पसन्द नहीं। और जब भी देते हैं, उदास हो जाते हैं। चारों ओर सन्नाटा जैसे मुसलाधार वर्षा के पूर्व आसमान शांत हो। जैसे आज बस बरसने ही वाला हो।

खेल शिक्षक कुछ कहते इसके पहले रवि ने कहा। बिजली की सी हँसी के साथ विश्वास की मुद्रा में बोला।

- सर, क्या खेल कल नहीं हो सकता?

विस्मित स्वर में सर ने पूछा।

- क्या हुआ ?

दृढ़ स्वर में उसने कहा,

- सर ये मैच क्या कल नहीं हो सकता?

अर्षित दिगाल ने खीझते हुए कहा।

- तुझपर क्या अच्छाई का भूत सवार है ?

रवि ने कहा, 'दादा जी ने मरते समय कहा, न था ? मेहनत करो, खाओ।'

खेल शिक्षक ने रवि को सीने से लगा लिया एवं मैदान के कण - कण में जो हर्ष और उल्लास का स्वर था उसका एक ही अर्थ था, जिसे समझाने की कोई आवश्यकता नहीं है। एक दिन का खिलाड़ी रंजन मिश्रा ने सर हिलाते हुए अपने कैप्टन का समर्थन किया, इस मधुर महायुद्ध के महानायक का समर्थन किया।

सारा मैदान एक दीर्घ निश्वास के आँच में जैसे तपने लगा।

जो जीतेगा जीते, जो हारेगा हारे। कल फिर खेल होगा और जारी रहेगा।

(सुवक्ता एवं दार्शनिक प्रोफेसर विरजा त्रिपाठी जी को समर्पित)

कहा जाता है कि दूसरों की मदद करना ही सबसे बड़ा धर्म है। मदद एक ऐसी चीज है जिसकी जरूरत इंसान को पड़ती है, चाहे आप बूढ़े हो; बच्चे हो या जवान: सभी के जीवन में एक समय ऐसा जरूर आता है जब हमें दूसरों की मदद की जरूरत पड़ती है।

आज हर इंसान ये बोलता है कि कोई किसी की मदद नहीं करता, पर आप खुद से पूछिये - क्या आपने कभी किसी की मदद की है ?

दूसरों की मदद करके भी हम असल में खुद की ही मदद कर रहे होते हैं। जब हम दूसरों की मदद करेंगे तभी जरूरत पड़ने पर कोई दूसरा हमारी भी मदद करेगा।

जरूरत नहीं कि मदद पैसे से ही कि जाये, आप किसी वृद्ध व्यक्ति को सड़क पार करा सकते हैं, या किसी प्यासे को पानी पिला सकते हैं या किसी हताश इंसान को सलाह दे सकते हैं या किसी को खाना खिला सकते हैं। ऐसा करने से आप को बहुत खुशी मिलेगी और लोग भी आपकी मदद जरूर करेंगे।

सोनिआ नायक, +3 द्वितीय वर्ष

वह सूरज डूब रहा था

सन्ध्या के उस प्रहर में
अपनी सखियों के मेल में
देखा अनेकानेक लोगों को
जिनके पास समय न था ठहरने को
जो बेताब थे अपने घर जाने को।

मन में एक खीज उठी
पता नहीं ये कैसा समय आया
लोगों को न फरक किसी बात की थी,

कुछ दरिद्रों का वहां डेरा लगा हुआ था
अचानक उस भीड़ में एक बच्चा दिख गया,
चुपचाप खड़ा हुआ कुछ दृश्य देख रहा था,
कौतूहल से जब मैं उस और मुडी

तो देखा---
कोलाहल भरी इस दुनिया का एक
और एक दिन गुजर रहा था
क्यों की वह सूरज डूब रहा था
वह सूरज डूब रहा था

पिंकी सिंह, +3 द्वितीय वर्ष

मनीषा साहू,+3 प्रथम वर्ष

सपने

अपने सपनों को जिन्दा रखिए।
अगर आपके सपनों की चिंगारी
बुझ गई है तो इसका मतलब यह है
कि आपने जीते जी आत्महत्या कर ली है।

मुसीबत

जीवन में कठिनाईयाँ हमें बर्बाद
करने नहीं आती है, बल्कि यह
हमारी छुपी हुई सामर्थ्य और
शक्तियों को बहार निकालने में
हमारी मदद करती है
कठिनाइयों को यह जान लेने दो की
आप उससे भी ज्यादा कठिन हो।

शरीफा शरवारी, +3 प्रथम वर्ष

यादों के गलियारों से

एक दिवसीय संगोष्ठी ; विषय - छायावाद : एक अनुशीलन

मुख्य वक्ता - आचार्य शंकरलाल पुरोहित जी

विभाग की छात्राओं के साथ मनोरंजन के कुछ हल्के फुल्के पल,

मलिक मोहम्मद जायसी कृत पद्मावत पर आधारित “पद्मावत” फिल्म देखते हुए

धन्यवाद